

शूकर पालन: एक लाभदायक व्यवसाय

डॉ. सतीश कुमार पाठक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

हमारे देश में कुपोषण की समस्या बहुत ही व्यापक है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ महँगाई इस समस्या को और विकल बना देती है। शूकर सभी पशुधनों में कुपोषण की समस्या का समाधान करने में सबसे ज्यादा संक्षम है। शूकर पालन ग्रामीण किसानों के लिए रोजगार का एक बेहतर अवसर पैदा करता है। इसके अग्रलिखित लाभ हैं :-

- शूकर (pig) का आहार रूपान्तरण अनुपात (Feed conversion ratio) सबसे अच्छा होता है अतः इनके आहार के लिए अतिरिक्त व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है। ये अन्य पशुओं के लिए अखाद्य पदार्थ, बचा-खुचा, खराब, माँस उद्योग का गौण उत्पाद (by product) तथा कूड़ेदान में फेका गया होटल या घर का बेकार खाने का भी उपभोग कर लेते हैं।
- शूकर पालन आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए रोजगार का एक साधन प्रदान करता है।
- शूकर की विकास दर अन्य पशुओं की तुलना में बहुत तेज होती है और ये एक ब्यात में 10 से 14 बच्चे देती है।
- शूकर के आवास के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है। इसमें बहुत थोड़ी पूँजी से ही काम चल जाता है।
- शूकर का प्रबंधन बहुत ही आसान है।
- शूकर के माँस की माँग देश और विदेश दोनों में काफी है।
- शूकर पालन से लागत और लाभ का मिलना बहुत ही शीघ्र शुरू हो जाता है।
- शूकर सबसे ज्यादा माँस देने वाला पशु है। (dressing percentage 65-80%)
- शूकर वसा का संग्रहण बहुत ही तीव्र गति से करते हैं, अतः इसकी माँग मुर्गी आहार, साबुन, पेन्ट एवं अन्य दूसरे रासायनिक उद्योगों में बहुत है।
- शूकर का माँस अन्य पशुओं की तुलना में पोषण से भरपूर होता है।